MPOLCC-7
MA (Sem-II)

POL. SCIENCE

Dr. S. B. Kumar

SECOND COLD WAR or, New Cold War (1980-91)
द्वितीय शीत युद्ध अथवा नया शीत युद्ध

शीत युद्ध की ~~काल~~ अवधि को अनेक चरणों में बांटकर देखा जाता है। शीत युद्ध का पहला चरण 1947-1953 (स्टालिन की मृत्यु) तक माना जाता है। इस अवधि में जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया तथा बर्लिन की शांति समस्या और कोरिया के युद्ध के संबंध में दोनों महाशक्तियों ने अपने-अपने प्रभाव बढ़ाने के प्रयास किए। इस काल में जर्मनी का बँटवारा, नाटो की स्थापना, साम्यवादी चीन का उदय इत्यादि प्रमुख घटनाएँ घटी।

शीत युद्ध का द्वितीय चरण (1953 से 1963) - 1952 में अमेरिका में ट्रूमैन के स्थान पर आइजनहॉवर राष्ट्रपति बने तथा 1953 में रूस में ~~स्टा~~ स्टालिन के स्थान पर ख्रुश्चेव राष्ट्रपति बने। इस ~~काल~~ काल में सोवियत संघ द्वारा आणविक परीक्षण करना, सीटो का निर्माण, वारसा पैक्ट का निर्णय, हिन्द-चीन की ~~घटनाएँ~~ प्रश्न, हंगरी में सोवियत हस्तक्षेप, बर्लिन दीवार संकट इत्यादि प्रमुख घटनाएँ रही।

शीत युद्ध के तीसरे चरण (1963-1979) में दोनों महाशक्तियों के बीच तनावों में शिथिलता आई लेकिन वियतनाम, दक्षिणी एशिया तथा बर्लिन में शीत युद्ध विद्यमान रहा। इस काल में परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (NTBT), भारत-पाक युद्ध, अरब-इजराइल युद्ध, दितान्त (तनाव शैथिल्य) का विचार, बर्लिन समझौता, कैम्प-डेविड समझौता इत्यादि प्रमुख घटनाएँ घटीं ~~इत्यादि~~ जो शीत युद्ध की समाप्ति के सूचक थे।

Jimmy Carter
Brezhnev

1970 से 1980 तक दोनों महाशक्तियों ने दितांत का सहारा लेकर आपसी संबंधों को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए। दोनों महा-शक्तियों ने परमाणु युद्ध न करने की बात स्वीकार की, लेकिन 1979 के अंत में अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप (intervention) को अमेरिका ने विश्व शांति के लिए खतरा बताया। इससे दोनों महाशक्तियों के बीच एक नये शीत युद्ध की शुरुआत हो गई। इसे ही द्वितीय शीत युद्ध के नाम से भी जाना जाता है, जो 1980 से 1990 तक की अवधि में अंतर्राजनीतिक पटल पर छाया रहा।

द्वितीय शीत युद्ध (Second Cold War) के कारणों में निम्नलिखित थे:

1.) सोवियत संघ का अधिक शक्तिशाली होना
2.) रीगन के शासन काल में अमेरिकी विदेश नीति में परिवर्तन।

Scanned with CamScanner

3.) अंतरिक्ष हथियारों की प्रतिस्पर्द्धा।
4.) अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप।
5) दक्षिण-पूर्व ऐशिया में सोवियत संघ के प्रभाव का बढ़ना।
6.) यूरोप में सोवियत संघ द्वारा मध्यम दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों की तैनाती।
7. स्टारवार्स योजना

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम शीत युद्ध और द्वितीय शीत युद्ध एक दूसरे से भिन्न था। पुराने शीत युद्ध का केन्द्र यूरोप था जबकि द्वितीय शीत युद्ध का केन्द्र एशिया बना। पुराने में चीन शामिल नहीं था लेकिन नये में हो गया। पुराने शीत युद्ध में दोनों महाशक्तियाँ आणविक युद्ध के पक्ष में नहीं थी लेकिन नये में दोनों ने सीमित परमाणु युद्ध की वकालत की। पुराने शीत युद्ध का ध्रुवीकरण नये में शिथिल हो गया। पुराना शीत युद्ध साम्यवाद विरोधी था जबकि नया सोवियत संघ विरोधी। पुराने शीत युद्ध में सोवियत संघ का मुकाबला केवल अमेरिका से था जबकि नये में अमेरिका के साथ चीन, ब्रिटेन और फ्रांस थे।

1980 से 1987 तक चले द्वितीय ~~विश्वयुद्ध~~ शीत युद्ध के निम्नलिखित परिणाम रहे :
1.) दितान्त (तनाव शैथिल्य) की नीति जो 1962-72 तक दोनों महाशक्तियों के बीच रहा, वह दूसरे शीत युद्ध में समाप्त हो गया।
2.) दूसरे शीत युद्ध में निःशस्त्रीकरण, परमाणु हथियारों पर लगी रोक, परमाणु अप्रसार संधि (Nuclear Non-proliferation Treaty-NPT) आदि का स्थापन हो गया। बल्कि स्टारवार्स जैसे खतरनाक कार्यक्रम की शुरुआत हुई।
3) इस काल में नये-नये शस्त्रों की खोज, लम्बी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों (ICBM) का इजाद, नये सैन्य अड्डों का निर्माण, शीघ्र तैनात सेना (Rapid Deployment Force-RDF) आदि का विकास हुआ।

संक्षेप में कहा जा सकता है दोनों महाशक्तियाँ शीत युद्ध के वातावरण से निकलकर तनाव शैथिल्य की नीति अपनाने के बाद पुनः शीत युद्ध के वातावरण में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को ला खड़ा किया।

—x—

Scanned with CamScanner